BASL–302

वेद एवं उपनिषद्

कला में स्नातक (बीए–12 / 16 / 17)

तृतीय वर्ष, सत्र 2017

समय : 3 घण्टा पूर्णांक : 80

नोट : यह प्रश्न पत्र अस्सी (80) अंकों का है जो तीन (03) खण्डों 'क', 'ख' तथा 'ग' में विभाजित है। शिक्षार्थियों को इन खण्डों में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

खण्ड–क

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

नोट : खण्ड 'क' में चार (04) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं। प्रत्येक प्रश्न के लिए उन्नीस (19) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल दो (02) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं दो की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए—

(क) अग्निः पूर्वेभिर्ऋषिभिरीड्यो नूतनैरुतः।
स देवाँ एह वक्षति॥

(ख) विष्णोर्नु कं वीर्याणि प्रवोचं
यः पार्थिवानि विभये रजाँसि।
यो अस्कभायदुत्तरं सधस्थं
विचक्रमाणस्त्रैधोरुगायः॥

(ग) यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं
तदु सुप्तस्य तथैवेति।
दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं
तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥

(घ) द्वेष्टि श्वश्रूरप जाया रुणद्धि
न नाथितो विन्दते भर्डितारम्।
अश्वस्येव जरतो वस्न्यस्य
नाहं विन्दामि कितवस्य भोगम्॥

2. निम्नलिखित में से किन्हीं दो की ससन्दर्भ हिन्दी व्याख्या कीजिए—

(क) पीतोदका जग्धतृणा दुग्धदोहा निरिन्द्रियाः।
अनन्दा नाम ते लोकास्तान् स गच्छति ता ददत्॥

(ख) शान्तसङ्कल्पः सुमना यथा स्या-
द्वीपमन्युर्गौतमो माभि मृत्यो।
त्वत्प्रसृष्टं याभिवदेत् प्रतीत
एतत् त्रयाणां प्रथमं वरं वृणे॥

(ग) श्वो भावा मर्त्यस्य यदन्तकैतत्
सर्वेन्द्रियाणां जरयन्ति तेजः।
अपि सर्वं जीवितमल्पमेव
तवैव वाहास्तव नृत्यगीते॥

(घ) न जायते म्रियते वा विपश्चिन्
नायं कुतश्चिन्न बभूव कश्चित्।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो
न हन्यते हन्यमाने शरीरे॥

3. अग्नि देवता का परिचय दीजिए।
4. नचिकेता के द्वारा माँगे गये तीन वरों का वर्णन कीजिए।

खण्ड–ख

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

नोट : खण्ड 'ख' में आठ (08) लघु उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं। प्रत्येक प्रश्न के लिए आठ (08) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल चार (04) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. यजुर्वेद पर एक टिप्पणी लिखिए।
2. सामवेद के स्वरूप व शाखा पर प्रकाश डालिए।
3. ऋग्वेद का परिचय दीजिए।
4. वेदाङ्ग व्याकरण का परिचय संक्षेप में दीजिए।
5. आरण्यकों के वर्ण्य विषय पर प्रकाश डालिए।
6. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

   स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव।
   सचस्वा न स्वस्तये॥
7. कठोपनिषद् में प्रतिपादित 'रथ-रूपक' पर प्रकाश डालिए।
8. इन्द्र देवता का परिचय दीजिए।

खण्ड–ग

(वस्तुनिष्ठ प्रश्न)

नोट : खण्ड 'ग' में दस (10) वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिये गये हैं। प्रत्येक प्रश्न के लिए एक (01) अंक निर्धारित है। इस खण्ड के सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

सही विकल्प चुनिए :

1. ऋग्वेद का प्रथम सूक्त है—

   (अ) अग्नि (ब) इन्द्र

   (स) अक्ष (द) विष्णु

2. कतिक्रतुः है—

(अ) इन्द्र (ब) विष्णु

(स) अक्ष (द) अग्नि

3. विष्णु का विशेषण है—

(अ) राजन्तम् (ब) रत्नधातमम्

(स) त्रेधा विचक्रमाणः (द) सुषारथिः

4. वेद हैं—

(अ) 3 (ब) 4

(स) 6 (द) 5

5. कठोपनिषद् में प्रथम अध्याय में कितनी वल्ली हैं ?

(अ) 1 (ब) 2

(स) 3 (द) 4

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर सत्य या असत्य लिखकर दीजिए—

6. ऋग्वेद में प्रथम सूक्त अग्नि है।
7. वेद का घ्राण शिक्षा है।
8. रथ-रूपक ईशावास्योपनिषद् में है।
9. ब्राह्मण वेदों की व्याख्या और विनियोग बताने वाले ग्रन्थ हैं।
10. यजुर्वेद के शुक्ल और कृष्ण भेद नहीं हैं।